ईमान की

परख

ईमान की

परख

īmān kī parakh

An Examination of Faith

by W. Miller

(Urdu—Hindi script)

© 2019 MIK

published and printed by
Good Word, New Delhi

for enquiries or to request more copies:
askandanswer786@gmail.com

भरोसे के बग़ैर ज़िंदगी नामुमकिन

अगर कोई किसी दूर-दराज़ शहर में अपने दोस्त को कोई अहम पैग़ाम भेजना चाहे तो वह क्या करेगा? वह ख़त लिखेगा और उसे लेटरबक्स में डाल देगा। वह अपना पैग़ाम लेटर बक्स में क्यों डालता है? इसलिए कि उसे भरोसा है कि महकमाए-डाक उसका ख़त दोस्त तक पहुँचा देगा और जवाब भी लाएगा।

एक ताजिर अपना रुपया बैग में डालकर बैंक जाता है। वहाँ वह अपना रुपया ख़ज़ानची के सुपुर्द करके रसीद हासिल कर लेता और किसी फ़िकर के बग़ैर ख़ाली हाथ अपने घर चला जाता है। क्यों? इसलिए कि उसका बैंक के अमले पर भरोसा है।

एक मुसाफ़िर किसी दूसरे शहर जाने के लिए बस के अड्डे पर जाता और टिकट ख़रीदकर बस में बैठ जाता है। फिर वह दौराने-सफ़र अपने मुसाफ़िर साथी से बातें करने लगता या आँखें बंद

करके बेफ़िकर सो जाता है। क्यों? इसलिए कि उसे भरोसा है कि ड्रायवर उसे सहीह-सलामत मनज़िल तक पहुँचा देगा।

एक किसान अपने खेत में हल चलाता और फिर बीज बिखेरकर उसे मिट्टी से ढाँपने के लिए सुहागा फेरता है। बज़ाहिर तो ऐसा नज़र आता है कि उसने उस क़ीमती ग़ल्ले को जिसे वह अपनी ख़ुराक के तौर पर इस्तेमाल कर सकता था ज़ाया कर दिया है। वह ऐसा क्यों करता है? इसलिए कि उसे अपने बीज और ज़मीन पर भरोसा है कि एक दिन वह इस बीज से एक बड़ी फ़सल काटेगा।

अगर आप अपनी ज़िंदगी पर ग़ौर करें तो देखेंगे कि जो कुछ आप करते हैं भरोसे ही से करते हैं।

जिस पर भरोसा हो वह क़ाबिले-एतमाद हो

एतमाद के बग़ैर ज़िंदगी गुज़ारना नामुमकिन है। इसलिए जिस शख़्स या शै पर आपका भरोसा है उसका क़ाबिले-एतमाद होना लाज़िम है। लेटर बक्स जिस में ख़त डाला गया, ज़रूरी है कि वह महकमाए-डाक की मिलकियत हो और उसको ताला भी लगा हुआ हो, वरना ख़त के गुम होने का ख़तरा है। लाज़िम है कि बैंक का अमला दियानतदार और क़ाबिले-एतमाद हो वरना ख़दशा है

कि ताजिर का पैसा मारा जाए। बस के ड्रायवर के लिए भी ज़रूरी है कि वह तजरबाकार हो और उसके होशो-हवास क़ायम हों वरना सवारियों के लिए ख़तरा है। इसी तरह बीज और ज़मीन का भी अच्छा होना लाज़िमी है। अगर वह सेहतमंद और अच्छे नहीं तो ख़्वाह किसान का एतमाद कितना ही बड़ा क्यों न हो वह अच्छी फ़सल हासिल नहीं कर सकता। बाज़ औक़ात लोग इसलिए अपने सब कुछ यहाँ तक कि ज़िंदगी से भी हाथ धो बैठते हैं कि जिस पर उनका भरोसा था वह क़ाबिले-एतमाद न निकला।

ख़ुदा क़ाबिले-एतमाद हो

ख़ुदा पर भरोसा का दूसरा लफ़्ज़ ईमान है। इंजील मुनव्वरा फ़रमाती है,

> ईमान क्या है? यह कि हम उस में क़ायम रहें जिस पर हम उम्मीद रखते हैं और कि हम उसका यक़ीन रखें जो हम नहीं देख सकते। (इबरानियों 11:1)

बाज़ लोग कहते हैं कि अहम बात यह नहीं कि हम किस पर ईमान रखें बल्कि यह कि हमारा किसी न किसी पर ईमान या एतमाद ज़रूर हो। यह तो गोया ऐसे ही है जैसे कोई कहे कि कोई फ़रक़ नहीं पड़ता ख़्वाह मैं किसी नातजरबाकार ड्रायवर के साथ

सफ़र करूँ या किसी तजरबाकार ड्रायवर के साथ। अच्छे ड्रायवर पर भरोसा मुसाफ़िर को ख़ुदा की मदद से सहीह-सलामत मनज़िल पर पहुँचा देगा जब कि नातजरबाकार ड्रायवर पर एतमाद तबाही का बाइस बन सकता है। चुनाँचे जब कोई यह कहता है कि “मैं मज़हबी आदमी हूँ और मेरे पास ईमान है” तो सवाल यह है कि वह किस पर ईमान रखता है। अगर वह जवाब दे कि “मैं ख़ुदा पर ईमान रखता हूँ” तो सवाल यह है कि वह किस क़िस्म के ख़ुदा पर ईमान रखता है। क्या वह क़ाबिले-एतबार है?

अगरचे अकसर मज़ाहिब एक आला क़ुव्वत पर ईमान रखते हैं तो भी उनका तसव्वुरे-ख़ुदा एक दूसरे से मुख़्तलिफ़ है। बाज़ ख़याल करते हैं कि ख़ुदा एक ही है जब कि दीगर मुतअद्दिद देवताओं पर ईमान रखते हैं। बाज़ अपने हाथ की बनाई हुई मूरतों की परस्तिश करते और उन्हें देवता कहते हैं जब कि दूसरे अनदेखे ख़ुदा की परस्तिश करते हैं जिसने सब चीज़ें पैदा की हैं। बाज़ ऐसे ख़ुदा पर ईमान रखते हैं जो नेक है और बदी नहीं कर सकता, जब कि दीगर यह ख़याल करते हैं कि उनके देवता गुनाहगार इनसानों की मानिंद ज़ालिम , झूटे और बद-अख़लाक़ हैं। बाज़ ईमान रखते हैं कि उनका ख़ुदा नज़दीक है और इनसानों की दुआएँ सुनता है, लेकिन दूसरे यह ख़याल करते हैं कि ख़ुदा इतना दूर है कि वह ज़मीन पर इनसानों की मुतलक़ परवा नहीं करता।

चुनाँचे हमारे लिए यह काफ़ी नहीं कि हम किसी भी ख़ुदा पर ईमान रखें। सच्चा ईमान सिर्फ़ वही है जो सच्चे ख़ुदा पर है, उस ख़ुदा पर जो क़ाबिले-एतमाद है।

अंबिया से क़ाबिले-एतमाद ख़ुदा का इनकिशाफ़

लेकिन क़ाबिले-एतमाद ख़ुदा कौन है? गुनाहगार इनसान उसे अपनी अक़्ल या अपनी दुआओं, रियाज़त और ख़ैरात के ज़रीए कभी नहीं पा सका। चूँकि इनसान ख़ुदा को तलाश करने में नाकाम रहा है इसलिए उस सच्चे ख़ुदा ने ख़ुद अपने आपको उस पर ज़ाहिर किया। क़दीम ज़माने में अल्लाह ने उन लोगों से कलाम किया जो अंबिया कहलाते हैं। यों उसने हज़रत नूह, हज़रत इब्राहीम और हज़रत मूसा वग़ैरा को बताया कि वह कौन है और क्या चाहता है कि इनसान बने और करे। इन अंबिया ने ख़ुदा का पैग़ाम अवाम तक पहुँचाया। अकसर मरतबा उन्होंने अल्लाह के इस कलाम को लिख भी लिया ताकि बाद की नसलें पढ़कर इससे मुस्तफ़ीद हों। फिर आख़िर में उसने अपने आपको हुज़ूर अल-मसीह में ज़ाहिर किया जो हक़ तआला के ज़िंदा कलाम हैं।

क़दीम अंबिया की तमाम कुतुब और वह कुतुब भी जो हुज़ूर अल-मसीह के शागिर्दों ने आपके मुताल्लिक़ तहरीर किं, उनका दुनिया की तमाम बड़ी ज़बानों में तरजुमा किया जा चुका है। चुनाँचे अगर कोई ख़ुदाए-बर-हक़ को जानना चाहे तो वह इन मुतबर्रक किताबों को पढ़े। यह 66 किताबें एक जिल्द में जमा कर दी गई हैं जो किताबे-मुक़द्दस कहलाती है। इस में यह हिस्से शामिल हैं,

- तौरेत
- तवारीख़ के सहायफ़
- सहायफ़े-हिकमतो-ज़बूर
- सहायफ़े-अंबिया
- इंजील शरीफ़

ईमान इल्म से कहीं ज़्यादा है

फ़रज़ करें कि किसी को किताबे-मुक़द्दस के मुतालए से मालूम हो कि अल्लाह एक है, अल्लाह क़ादिरे-मुतलक़ है, अल्लाह पाक है, अल्लाह मुहब्बत है, अल्लाह आदिल है और अल्लाह चाहता

है कि इनसान उससे मुहब्बत रखकर उसकी फ़रमाँबरदारी करें और एक दूसरे से भी मुहब्बत रखें। क्या अल्लाह के मुताल्लिक़ यह इल्म ईमान है? हरगिज़ नहीं! लाज़िम नहीं कि जो अल्लाह के मुताल्लिक़ इल्म रखे वह ईमान भी रखे। इंजील शरीफ़ में इर्शाद है कि

> शयातीन भी यह ईमान रखते हैं, गो वह यह जानकर ख़ौफ़ के मारे थरथराते हैं। (याक़ूब 2:19)

वह जानते हैं कि ख़ुदा है, लेकिन इसके बावुजूद भी वह अल्लाह के ख़िलाफ़ ही हैं। बेशक यह दुरुस्त है कि हक़ीक़ी ईमान की बुनियाद हक़ तआला के बारे में सहीह इल्म है। लेकिन ईमान इस इल्म से कहीं ज़्यादा है।

ईमान सच्चे ख़ुदा पर भरोसा है

फिर ईमान क्या है? ईमान उस सच्चे ख़ुदा पर भरोसा है जिसने अपने आपको पाक अंबिया और हुज़ूर अल-मसीह के वसीले से ज़ाहिर किया है। जो कोई उस पर ईमान रखे वह यह ईमान अल्लाह के अहकाम की पैरवी करने से ज़ाहिर करेगा।

हज़रत इब्राहीम का पुख़्ता ईमान

हज़रत इब्राहीम को ईमानदारों का बाप कहा जाता है।[1] उन्हीं ने हमारे लिए हक़ीक़ी ईमान का नमूना क़ायम किया है। बुतपरस्ती तर्क करके वह सच्चे और वाहिद ख़ुदा पर ईमान और भरोसा रखने लगे। अब से वह हर एक बात में बारी तआला की फ़रमाँबरदारी करना चाहते थे। ख़ुदाए-बर-हक़ पर उनका ईमान इतना मज़बूत था कि जब उसने उन्हें बेटे को क़ुरबान करने को कहा तो वह फ़ौरन तैयार हो गए। क्योंकि उन्हें यक़ीन था कि बेटे के क़ुरबान होने के बाद भी अल्लाह तआला उसे फिर ज़िंदा कर देगा।[2] लेकिन अल्लाह तआला ने हज़रत इब्राहीम को आज़माने के बाद बेटे को ज़बह करने से रोक दिया और उसकी जगह क़ुरबानी के लिए एक मेंढा मुहैया किया। हज़रत इब्राहीम उम्र भर अल्लाह पर पूरा तवक्कुल करते रहे। इसी लिए उन्हें ख़लीलु-ल्लाह[3] यानी अल्लाह के दोस्त कहा जाता है।

[1]इंजील मुनव्वरा, रोमियों 4:11

[2]तौरेत शरीफ़, पैदाइश 22:1-18; इंजील जलील, इबरानियों 11:8-12, 18-19; रोमियों 4:16-25

[3]इंजील जलील, याक़ूब 2:23

हुज़ूर अल-मसीह पर ईमान

जब हज़रत ईसा ने इसराईल को बारी तआला का पैग़ाम सुनाया तो आपके पहले अलफ़ाज़ यह थे कि

> अल्लाह की बादशाही क़रीब आ गई है। तौबा करो और अल्लाह की ख़ुशख़बरी पर ईमान लाओ।
> (इंजील जलील, मरक़ुस 1:15)

चूँकि अल्लाह की हुकूमत आनेवाली है इसलिए अपने आपको तैयार रखो। हुज़ूर अल-मसीह को अल्लाह का भेजा हुआ क़बूल करके तौबा करो।

हुज़ूर हर वक़्त ऐसे लोगों की तलाश में रहते थे जो आप पर ईमान लाएँ। जब आपको ऐसे लोग मिल जाते तो आपका दिल ख़ुशी से सरशार हो जाता।

ईमान हुज़ूर के क़दमों में लाता है

एक दिन हुज़ूर अल-मसीह एक बहुत बड़े हुजूम से घेरे हुए चल रहे थे कि एक औरत भी साथ हो ली। यह औरत बारह साल से एक लाइलाज बीमारी में मुब्तला थी। अपने दिल में उसने कहा,

> अगर मैं सिर्फ़ उसके लिबास को ही छू लूँ तो मैं शिफ़ा पा लूँगी। (इंजील मुनव्वरा, मरक़ुस 5:28)

उसका हुज़ूर पर ईमान बड़ा पुख़्ता था, और उसने पीछे से आकर आपके लिबासे-मुबारका का किनारा छू लिया। छूते ही उसे शिफ़ा मिल गई। लेकिन हुज़ूर अल-मसीह को फ़ौरन ही पता चला, और आपने उससे मुख़ातिब होकर बड़ी नरमी से फ़रमाया,

> बेटी, तेरे ईमान ने तुझे बचा लिया है। सलामती से जा और अपनी अज़ियतनाक हालत से बची रह। (इंजील मुनव्वरा, मरक़ुस 5:25-34)

उस औरत को इल्म था कि हुज़ूर अल-मसीह बीमारों को शिफ़ा दे सकते हैं। उसे कामिल ईमान था कि आप मुझे भी इस मूज़ी मरज़ से मख़्लसी दिला देंगे। लेकिन याद रहे, शिफ़ा पाने के लिए उसका यह एतमाद और इल्म काफ़ी नहीं था। लाज़िम था कि वह हुज़ूर के पास आकर आपको छुए, कि वह आपके क़दमों में आकर आपका तजरबा करे।

ईमान हुज़ूर के इख़्तियार पर यक़ीन है

एक और मौक़े पर एक रोमी अफ़सर ने हुज़ूर के पास आकर अपने ख़ादिम के लिए जो सख़्त बीमार था शिफ़ा की दरख़ास्त की। आपने उसकी दरख़ास्त क़बूल फ़रमाई और उसके घर जाने के लिए तैयार हुए। लेकिन उस अफ़सर ने जवाब दिया,

> नहीं ख़ुदावंद, मैं इस लायक़ नहीं कि आप मेरे घर जाएँ। बस यहीं से हुक्म करें तो मेरा ग़ुलाम शिफ़ा पा जाएगा। (मत्ती 8:8)

हुज़ूर अल-मसीह यह देखकर कि एक ग़ैरयहूदी अफ़सर आप पर इस क़दर पुख़्ता ईमान रखता है निहायत हैरान हुए। आपने फ़रमाया।

> जा, तेरे साथ वैसा ही हो जैसा तेरा ईमान है। (मत्ती 8:13)

जब अफ़सर अपने घर पहुँचा तो देखा कि उसका ख़ादिम बिलकुल सेहतयाब हो चुका है।[1] उसका हुज़ूर के इख़्तियार पर पूरा ईमान था, और इसी बिना पर नौकर को सेहत मिली।

---

[1] इंजील जलील, मत्ती 8:5-13

इंजील मुनव्वरा में ऐसे मुतअद्दिद बीमारों का ज़िक्र है जो पुख़्ता ईमान रखकर आपके पास आए। आपने उन में से किसी एक को भी शिफ़ा देने से गुरेज़ न किया। आपका फ़रमान है,

> जो भी मेरे पास आएगा उसे मैं हरगिज़ निकाल न दूँगा। (इंजील जलील, यूहन्ना 6:37)

ईमान पहाड़ों को खिसका सकता है

हुज़ूर ने मुतअद्दिद बार फ़रमाया कि हक़ीक़ी ईमान किस क़दर मुअस्सिर है। एक मरतबा एक बाप अपने बीमार बेटे को आपके शागिर्दों के पास लाया। शागिर्दों ने उस में से बदरूह निकालने की कोशिश की लेकिन नाकाम रहे। जब हुज़ूर अल-मसीह तशरीफ़ लाए तो आपके हुक्म पर वह फ़ौरन निकल गई। लड़का सेहतयाब हो गया।

यह देखकर शागिर्दों ने आपसे पूछा कि हम उसे निकालने में क्यों नाकाम रहे? हुज़ूर अल-मसीह ने फ़रमाया,

> अपने ईमान की कमी के सबब से। मैं तुम्हें सच बताता हूँ, अगर तुम्हारा ईमान राई के दाने के बराबर भी हो तो फिर तुम इस पहाड़ को कह

> सकोगे, 'इधर से उधर खिसक जा,' तो वह खिसक जाएगा। और तुम्हारे लिए कुछ भी नामुमकिन नहीं होगा। (इंजील मुनव्वरा, मत्ती 17:20)

ईमान तूफ़ान में हमें मज़बूत रखता है

एक मरतबा हुज़ूर अल-मसीह शागिर्दों समेत गलील की झील में एक छोटी कश्ती में सवार थे कि अचानक झील पर सख़्त आँधी चलने लगी। कश्ती लहरों में डूबने लगी। उस वक़्त हुज़ूर अल-मसीह कश्ती में सो रहे थे। शागिर्दों ने दहशतज़दा होकर आपको जगाया और कहा

> ख़ुदावंद, हमें बचा, हम तबाह हो रहे हैं! (मत्ती 8:25)

खड़े होकर आपने फ़रमाया,

> ऐ कमएतक़ादो! घबराते क्यों हो? (मत्ती 8:26)

आपने हवा और पानी को डाँटा तो लहरें बिलकुल साकित हो गईं।

शागिर्द यह देखकर बहुत हैरान होकर कहने लगे,

> यह किस क़िस्म का शख़्स है? हवा और झील भी उसका हुक्म मानती हैं। (मत्ती 8:27)

सऊद के बाद भी हुज़ूर हाज़िर हैं

जब तक हुज़ूर अल-मसीह इस दुनिया में रहे, लोग आपके पास आ सकते, आपको देख सकते और आपकी आवाज़ सुन सकते थे। वह ईमान रख सकते थे कि आप उन्हें शिफ़ा देंगे। फिर आपको सलीब दी गई। वह दफ़न हुए और तीसरे दिन जी उठे। चालीस दिन के बाद वह आसमान पर सऊद फ़रमा गए। अब हम आपको अपनी जिस्मानी आँखों से नहीं देख सकते और न ही अपने हाथों से छू सकते हैं। क्या इससे आप पर ईमान बेफ़ायदा हो गया है? हरगिज़ नहीं!

हुज़ूर अल-मसीह आज भी ज़िंदा हैं और हमेशा हमारे साथ रहेंगे। अगरचे हम आपको नहीं देखते तो भी आप हमारे नज़दीक हैं और हमारी दुआएँ सुनते हैं। रूहुल-क़ुद्स के ज़रीए आप आज भी अपने पर ईमान लानेवालों की मदद करते हैं।

ईमान अल-मसीह की बख़्शिश को क़बूल करना है

हुज़ूर अल-मसीह के सऊदे-आसमानी के बाद शागिर्दों पर रूहुल-क़ुद्स नाज़िल हुआ। उससे मामूर होकर शागिर्दों ने यहूदी क़ौम को बताया कि हज़रत ईसा वही मसीह हैं जिनकी आमद के बारे में क़दीम अंबिया पेशगोइयाँ करते आए थे।

उन्होंने सलीब का मक़सद भी बताया : इनसान अपने गुनाहों के बाइस जन्नत में दाख़िल नहीं हो सकता। इसलिए अल-मसीह ने सलीब पर एक बार सदा के लिए वह सज़ा उठाई जो इनसान को उठानी थी। शागिर्दों ने फ़रमाया कि हुज़ूर अल-मसीह मुर्दों में से जी उठे हैं, बल्कि हमने आपको ज़िंदा ही देखा है। यों जन्नत का रास्ता खुल गया है। अब उन पर ईमान लाओ जो हमारी ख़ातिर मुए और जी भी उठे हैं।

जब लोगों ने इस पैग़ाम को सुना तो फ़ौरन ही तीन हज़ार अपने गुनाहों से तौबा करके हुज़ूर अल-मसीह पर ईमान ले आए।[1] अल-मसीह के बारे में जानना काफ़ी नहीं बल्कि आप पर ईमान लाना ज़रूरी है। लाज़िम है कि जिस तरह मरीज़ अपने आपको क़ाबिले-एतबार डाक्टर के सुपुर्द कर देता है उसी तरह गुनाहगार इनसान

[1] इंजील मुनव्वरा, आमाल 2:4-41

अपने आपको हुज़ूर अल-मसीह के सुपुर्द कर दे। ज्योंही वह ईमान के साथ ऐसा करेगा हुज़ूर अल-मसीह उसे क़बूल करेंगे और गुनाह माफ़ करके उसे बचा लेंगे।

नजात के इस हैरतअंगेज़ पैग़ाम को इंजील जलील में यों बयान किया गया है,

> अल्लाह ने दुनिया से इतनी मुहब्बत रखी कि उसने अपने इक्लौते फ़रज़ंद को बख़्श दिया, ताकि जो भी उस पर ईमान लाए हलाक न हो बल्कि अबदी ज़िंदगी पाए। (यूहन्ना 3:16)

इंजील जलील में हम यों भी पढ़ते हैं,

> अगर तू अपने मुँह से इक़रार करे कि ईसा ख़ुदावंद है और दिल से ईमान लाए कि अल्लाह ने उसे मुर्दों में से ज़िंदा कर दिया तो तुझे नजात मिलेगी। (रोमियों 10:9-10)

मक़बूल ठहरने और नजात पाने की वाहिद शर्त हुज़ूर अल-मसीह पर ईमान लाना है। न तो हम नेक आमाल और न कोई और क़ीमत अदा करने से जन्नत में दाख़िल हो सकते हैं बल्कि सिर्फ़ और सिर्फ़ अल-मसीह पर ईमान लाने से। क्योंकि सज़ा

का तक़ाज़ा पूरा किया जा चुका है और बाक़ी भी सिर्फ़ हुज़ूर अल-मसीह ही पूरा करेंगे।

इनसान का फ़रज़ सिर्फ़ यह है कि वह नजात की उस बख़्शिश को जो अल्लाह ने हुज़ूर अल-मसीह में पेश की है बड़ी आजिज़ी और शुक्रगुज़ारी से क़बूल कर ले।

सिर्फ़ अल-मसीह पर ईमान नजात दिलाता है

एक मरतबा जब हुज़ूर अल-मसीह के पैरोकार पौलुस रसूल और सीलास एक यूनानी शहर फ़िलिप्पी में लोगों को आपके मुताल्लिक़ बता रहे थे तो उन्हें पकड़कर मारा पीटा और फिर क़ैद में डाल दिया गया। वहाँ उनके पाँव काठ में डाल दिए गए। आधी रात के क़रीब वह दुआ कर रहे और अल्लाह की तमजीद के गीत गा रहे थे कि अचानक बड़ा ज़लज़ला आया और क़ैदख़ाने की पूरी इमारत बुनियादों तक हिल गई। फ़ौरन तमाम दरवाज़े और तमाम क़ैदियों की ज़ंजीरें खुल गईं। दारोग़ा जाग उठा। जब उसने देखा कि जेल के दरवाज़े खुले हैं तो वह अपनी तलवार निकालकर ख़ुदकुशी करने लगा, क्योंकि ऐसा लग रहा था कि क़ैदी फ़रार हो गए हैं। लेकिन

पौलुस रसूल चिल्ला उठे, “मत करें! अपने आपको नुक़सान न पहुँचाएँ। हम सब यहीं हैं।”

तब दारोग़ा पौलुस रसूल और हज़रत सीलास के सामने मुँह के बल गिरा और कहा “साहिबो, मुझे नजात पाने के लिए क्या करना है?”

उन्होंने जवाब दिया, “ख़ुदावंद ईसा पर ईमान लाएँ तो आप और आपके घराने को नजात मिलेगी।”

उसने फ़ौरन उनके फ़रमान पर अमल करके अपने घराने समेत नजात पाई।[1]

सिर्फ़ और सिर्फ़ हुज़ूर अल-मसीह पर ईमान नजात दिला सकता है।

ईमान तबदीलियाँ लाता है

जब कोई हुज़ूर अल-मसीह पर ईमान लाता है और अल्लाह उसे क़बूल करके माफ़ कर देता है तो फिर वह ईमान की ज़िंदगी गुज़ारने लगता है। इस ईमान का पहला नतीजा यह निकलता है कि उसके

[1]इंजील जलील, आमाल 16:16-34

दिल में पाकीज़गी आ जाती है और उसकी ज़िंदगी में नेक कामों के फल लगने लगते हैं।

कोई भी नेक आमाल या पाकीज़ा ज़िंदगी के वसीले से नजात कमा नहीं सकता, क्योंकि नजात अल्लाह तआला की बख़्शिश है और इसे ख़रीदा नहीं जा सकता। ताहम हर वह शख़्स जो हक़ीक़ी तौर पर हुज़ूर अल-मसीह पर ईमान लाकर नजात पाता है उसकी ज़िंदगी बतदरीज पाकीज़ा होती जाएगी और वह नेक काम करने लगेगा। मसीह पर ईमान जड़ है, और इस जड़ से रूह के ख़ूबसूरत फल मसलन मुहब्बत, ख़ुशी, इतमीनान, तहम्मुल, मेहरबानी और नेकी वग़ैरा निकलते हैं।[1] अगर कोई कहे कि वह मसीह पर ईमान रखता है लेकिन उसकी ज़िंदगी में यह रूहानी सिफ़ात नज़र नहीं आतीं तो इमकाने-ग़ालिब है कि वह अब तक हुज़ूर अल-मसीह पर सच्चे दिल से ईमान ही नहीं लाया। क्योंकि जो ईमान नेक आमाल और किरदारे-सालिहा पैदा नहीं करता मुर्दा है।[2]

ईमान दुआ को पुख़्ता बना देता है

हक़ीक़ी ईमान का एक नतीजा यह भी है कि अब हम मर्दे-दुआ बन जाते हैं। इंजील जलील में मरक़ूम है,

[1]इंजील मुनव्वरा, गलतियों 5:22-23
[2]इंजील मुनव्वरा, याक़ूब 2:18

> ईमान रखे बग़ैर हम अल्लाह को पसंद नहीं आ सकते। क्योंकि लाज़िम है कि अल्लाह के हुज़ूर आनेवाला ईमान रखे कि वह है और कि वह उन्हें अज्र देता है जो उसके तालिब हैं। (इबरानियों 11:6)

हुज़ूर अल-मसीह ने ख़ुद अपने शागिर्दों से फ़रमाया,

> जो कुछ भी तुम दुआ में माँगोगे वह तुमको मिल जाएगा। (इंजील मुनव्वरा, मत्ती 21:22)

अल्लाह पर हमारा ईमान हम में यह एतमाद पैदा कर देता है कि जब हम दुआ माँगते हैं तो वह हमारी सुनता है और जो कुछ माँगेंगे देगा। कभी कभार वह हमारी दरख़ास्तों का नफ़ी में जवाब देता है। तो भी हम उस पर भरोसा रख सकते और इसके लिए भी उसका शुक्र कर सकते हैं। क्योंकि हमें यक़ीन है कि वह हमें प्यार करता है और हमें वही चीज़ देगा जो हमारी बेहतरी के लिए है।

ईमान फ़िकरमंदी को दूर कर देता है

जो ईमान की ज़िंदगी गुज़ारता है वह अपनी ज़रूरियात के लिए फ़िकरमंद नहीं रहता। हुज़ूर ने अपने शागिर्दों को बताया कि जिस तरह तुम्हारा आसमानी बाप परिंदों को ख़ुराक देता और जंगली

फूलों को ख़ूबसूरत लिबास पहनाता है उसी तरह वह यक़ीनन तुम्हारी ज़रूरियात भी पूरी करेगा। इसलिए बेदीनों की तरह फ़िकरमंद न हो जो हक़ तआला को नहीं जानते।[1] ईमान में हम अपने आसमानी बाप से कह सकते हैं कि "हमारी रोज़ की रोटी आज हमें दे,"[2] और वह हमारी ज़रूरत के मुताबिक़ हमें देगा।

ईमान जन्नत की तसल्ली दिलाता है

बाज़ लोग मौत से ख़ौफ़ज़दा रहते हैं। उन्हें इस बात की तसल्ली नहीं कि वह मौत के बाद जन्नत में दाख़िल होंगे। लेकिन मसीह पर ईमान इस ख़ौफ़ को दूर कर देता है। इसलिए नहीं कि कोई भी इतना नेक है कि जन्नत में दाख़िल हो सके बल्कि इसलिए कि वह हुज़ूर पर ईमान लाया। जो भी आप पर ईमान लाकर आपके क़दमों में आए उसे रद्द नहीं किया जाएगा। ग़रज़, हुज़ूर पर ईमान लानेवालों को मौत से डरने की ज़रूरत नहीं। जो मुर्दों में से जी उठे वह उन सबको जो आप पर ईमान रखते हैं अबदी ज़िंदगी देंगे।

एक मरतबा आपने एक बाप से जिसकी प्यारी बेटी फ़ौत हो गई थी फ़रमाया,

---

[1] मत्ती 6:25-32

[2] मत्ती 6:11

> मत घबराओ, फ़क़त ईमान रखो। (मरक़ुस 5:36)

यह कहकर आपने उसकी बेटी को ज़िंदा कर दिया। हुज़ूर अल-मसीह उन सबसे जिन्हें मौत का सामना है फ़रमाते हैं,

> क़ियामत और ज़िंदगी तो मैं हूँ। जो मुझ पर ईमान रखे वह ज़िंदा रहेगा। (इंजील जलील, यूहन्ना 11:25)

उन्हें मौत से ख़ौफ़ज़दा होने की बिलकुल ज़रूरत नहीं।

ईमान अज़ीम शाहकार फ़राहम करता है

जो ईमान से ज़िंदगी गुज़ारता है वह हक़ तआला के अज़ीम शाहकार अंजाम दे सकता है ख़्वाह वह कितने ही नामुमकिन क्यों न नज़र आते हों। इस दुनिया का ख़ालिक़ चाहता है कि तमाम इनसानों को हुज़ूर अल-मसीह के वसीले से नजात की ख़ुशख़बरी पेश की जाए। वह चाहता है कि बीमार सेहतयाब और भूके सेर हो जाएँ, कि जाहिल तालीम हासिल करें और दुखी तसल्ली पाएँ। यों ऐसा अकसर हुआ है कि नौजवान या कम तालीमयाफ़्ता या ज़रूरतमंद लोगों ने ईमान की बुनियाद पर अल्लाह के जलाल के लिए बड़े बड़े काम अंजाम दिए हैं। मसलन हज़रत यूहन्ना

और हज़रत पतरस मछेरे थे, लेकिन उनकी मुनादी के वसीले से ब-यकवक़्त तीन हज़ार अफ़राद हुज़ूर अल-मसीह पर ईमान लाए।

क़रीबन दो सदियाँ पेशतर इंगलिस्तान में एक मोची बनाम विलियम कैरी रहता था। अगरचे उसकी तालीम कम थी लेकिन उसका ईमान बहुत पुख़्ता था। वह अपने नजातदहिन्दे की ख़िदमत बड़ी सरगरमी से किया करता था। जब उसे इल्म हुआ कि हिंदुस्तान में करोड़ों ने हुज़ूर अल-मसीह की ख़ुशख़बरी को नहीं सुना तो उसने इरादा किया कि मैं ख़ुद वहाँ जाकर लोगों को इंजील जलील का पैग़ाम पहुँचाऊँगा। इस सिलसिले में वह भारत पहुँचा, मक़ामी ज़बान सीखी और कलामु-ल्लाह का तरजुमा बंगाली और दीगर ज़बानों में किया। कैरी का मकूला था,

> ख़ुदा से उम्मीद रखो कि वह अज़ीम शाहकार वुजूद में लाएगा। ख़ुदा की ख़ातिर जिद्दो-जहद करो ताकि अज़ीम शहकार वुजूद में आएँ।

चूँकि उसका ईमान पुख़्ता था इसलिए वह हक़ तआला की ख़ातिर अज़ीम काम अंजाम दे सका।

एक मरतबा अमरीका में एक आदमी ग़रीब लड़के और लड़कियों के लिए स्कूल क़ायम करना चाहता था। इसके लिए बहुत पैसे की ज़रूरत थी, लेकिन उसके पास रुपया नहीं था। ताहम उसका अल-

मसीह पर ईमान बहुत था। कुछ लोगों ने उससे कहा, "जो काम आप करना चाहते हैं वह नामुमकिन है।" उस मर्दे-ईमान ने जवाब दिया,

> ईमानदार का यही मक़सद है कि वह अल्लाह की मदद से नामुमकिन को मुमकिन बना दे।

आख़िर में उसने ईमान की क़ुदरत से स्कूल क़ायम किया जिससे हक़ तआला का जलाल ज़ाहिर हुआ।

अर्ज़

क्या आप साहिबे-ईमान होना चाहते हैं? हक़ तआला से मिन्नत करें, क्योंकि ईमान उसकी बख़्शिश है,[1] और वह माँगनेवालों को ज़रूर देता है।

तौरेत, ज़बूर और इंजील शरीफ़ का मुतालआ करें। जब आप जान जाएँगे कि हुज़ूर अल-मसीह किस क़दर भरोसे के लायक़ हैं तो अल्लाह तआला अपने पाक रूह की मारिफ़त आपको ईमान से मालामाल करेगा। फिर आप ज़िंदगी और मौत में ईमान के साथ अपने नजातदहिन्दे पर पूरा भरोसा रख सकेंगे।

[1] इंजील जलील, इफ़िसियों 2:8